

भारत में सामाजिक परिवर्तन एवं विकास

कक्षा 12 के लिए समाजशास्त्र की पाठ्यपुस्तक



12110



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण

सितंबर 2007 आश्विन 1929

पुनर्मुद्रण

नवंबर 2007 कार्तिक 1929

जनवरी 2009 पौष 1930

जनवरी 2010 माघ 1931

नवंबर 2010 अग्रहायण 1932

जनवरी 2012 माघ 1933

मार्च 2013 फाल्गुन 1934

जनवरी 2014 पौष 1935

जनवरी 2016 पौष 1937

फरवरी 2017 माघ 1938

दिसंबर 2017 माघ 1939

दिसंबर 2018 अग्रहायण 1940

PD 10T RSP© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
2007

₹ 110.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर
पर मुद्रित।प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली
110 016 द्वारा प्रकाशित तथा ताज प्रिंटर्स, 69/6ए
नजफगढ़ रोड, इंडस्ट्रियल एरिया, नजदीक कीर्ति नगर
मैट्रो स्टेशन, नयी दिल्ली - 110 015 द्वारा मुद्रित।**सर्वाधिकार सुरक्षित**

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस

श्री अरविंद मार्ग

नयी दिल्ली 110 016

फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड

हेली एक्सटेंशन, होस्टेकेरे

बनाशंकरी III इस्टेज

बैंगलुरु 560 085

फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन

डाकघर नवजीवन

अहमदाबाद 380 014

फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस

निकट: धनकल बस स्टॉप पनहटी

कोलकाता 700 114

फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स

मालीगांव

गुवाहाटी 781021

फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	: एम. सिराज अनवर
मुख्य संपादक	: श्वेता उप्पल
मुख्य व्यापार प्रबंधक	: गौतम गांगुली
मुख्य उत्पादन अधिकारी	: अरुण चितकार
सहायक संपादक	: एम. लाल
उत्पादन सहायक	: सुनील कुमार

आवरण एवं सज्जा

श्वेता राव

चित्रांकन

ब्लू फिश और जोयल गिल

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक विद्यालय और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास है। इस प्रयास में हर विषय को एक मजबूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित शिक्षा व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि विद्यालयों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभवों पर विचार करने का अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन कर सकेंगे। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक जिंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितनी वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक विद्यालय में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरीयत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में विचार-विमर्श और ऐसी गतिविधियों को प्राथमिकता देती है जिन्हें करने के लिए व्यावहारिक अनुभवों की आवश्यकता होती है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर हरि वासुदेवन और इस पाठ्यपुस्तक समिति के मुख्य सलाहकार प्रोफ़ेसर योगेन्द्र सिंह की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान किया, इस योगदान को संभव बनाने के लिए परिषद् उनके प्राचार्यों एवं उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री और सहयोगियों की मदद लेने में उदारतापूर्वक सहयोग दिया। परिषद् माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में

गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देती है। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

नयी दिल्ली
20 नवंबर 2006

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्

NBCampus

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, समाज विज्ञान उच्च माध्यमिक स्तरीय पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति

हरि वासुदेवन, प्रोफेसर, इतिहास विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता

मुख्य सलाहकार

योगेन्द्र सिंह, प्रोफेसर एमिरेटिस, सेंटर फॉर द स्टडीज ऑफ सोशल सिस्टम्स, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली

सलाहकार

मैत्रेयी चौधरी, प्रोफेसर, सेंटर फॉर द स्टडीज ऑफ सोशल सिस्टम्स, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली

सतीश देशपांडे, प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सदस्य

अंजन घोष, फ़ैलो, सेंटर फॉर स्टडीज इन सोशल साइंसेज, कोलकाता

अमिता बाविस्कर, प्रोफेसर, इंस्टीट्यूट ऑफ इकोनॉमिक ग्रोथ, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

कैरल उपाध्याय, विजिटिंग एसोसिएट फ़ैलो, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज, बंगलूरु

कुशल देव, प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टैक्नोलॉजी, मुंबई

खमयमबम इंदिरा, असिस्टेंट प्रोफेसर, नॉर्थ ईस्ट रीजनल इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन, रा.शै.अ.प्र.प., शिलांग

लता गोविंदन नायर, भूतपूर्व शिक्षक, सरदार पटेल विद्यालय, नयी दिल्ली

नित्या रामाकृष्णन, अधिवक्ता, दिल्ली उच्च न्यायालय, नयी दिल्ली

नंदिनी सुंदर, प्रोफेसर, डिपार्टमेंट ऑफ सोशियोलॉजी, दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सारिका चंद्रवंशी साजू, असिस्टेंट प्रोफेसर, आर.आई.ई., रा.शै.अ.प्र.प., भोपाल

तसौंगवाई न्यूमई, असिस्टेंट प्रोफेसर, नॉर्थ ईस्ट रीजनल इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन, रा.शै.अ.प्र.प., शिलांग

हिंदी अनुवाद

परशुराम शर्मा, भूतपूर्व निदेशक (राजभाषा), भारत सरकार, नयी दिल्ली

संजय गर्ग, सहायक निदेशक (लेखा), राष्ट्रीय महालेखागार, नयी दिल्ली

देवनाथ पाठक, पी.जी.टी. समाजशास्त्र, ब्लूबैल इंटरनेशनल स्कूल, नयी दिल्ली

राजेश कुमार, शोध छात्र, हिन्दी विभाग, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली

मंजु भट्ट, प्रोफेसर, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली

सदस्य समन्वयक

मंजु भट्ट, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली

आभार

इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में अनेक व्यक्तियों द्वारा कठिन परिश्रम किया गया और इस कार्य को एक चुनौती के रूप में निर्धारित समय में पूरा किया गया, परिषद् उन सभी की आभारी है। सर्वप्रथम हम उन सभी सहकर्मियों के आभारी हैं जिन्होंने अन्य व्यस्तताओं के होते हुए भी सभी कार्यों से पहले अपना समय एवं परिश्रम इस पुस्तक को पूरा करने में लगाया। हमारे मुख्य सलाहकार प्रोफ़ेसर योगेन्द्र सिंह समर्थन के स्तम्भ रहे और उन्होंने हमें आगे बढ़ने के लिए आवश्यक आत्मविश्वास दिया। प्रोफ़ेसर सिंह ने प्रोफ़ेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के साथ मिलकर वो अभय हस्त प्रदान किया जिससे हमारे सामूहिक प्रयासों को दिशा मिली। प्रोफ़ेसर सविता सिन्हा, प्रोफ़ेसर, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग एवं डीन, अकादमिक ने प्रत्येक क्षण हमें हर तरह का समर्थन प्रदान किया। डॉ. श्वेता उप्पल, मुख्य संपादक, प्रकाशन विभाग ने हमारे काम को सरल तो बनाया ही साथ ही हमें ऐसे ऊँचे लक्ष्य निर्धारित करने के लिए प्रोत्साहित भी किया जो शायद हम स्वयं तय न कर पाते।

हम सीमा बनर्जी, पी.जी.टी. समाजशास्त्र, लक्ष्मण पब्लिक विद्यालय, नयी दिल्ली; देव एन. पाठक, ब्लूबैल अंतर्राष्ट्रीय विद्यालय, नयी दिल्ली; निर्मला चौधरी, पी.जी.टी. समाजशास्त्र, नेहरू आदर्श सीनियर सेकेंडरी विद्यालय, दिल्ली, किरन शर्मा पी.जी.टी. समाजशास्त्र, राजकीय सीनियर सेकेंडरी विद्यालय, प्रेसीडेंट स्टेट, नयी दिल्ली को उनके सहयोग तथा सुझावों के लिए धन्यवाद ज्ञापित करते हैं। अनुवाद संबंधी सहायता के लिए परिषद् प्रोफ़ेसर सतीश देशपांडे, डॉ. राजीव गुप्ता, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, डॉ. जीतेन्द्र प्रसाद, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, डॉ. संजय गर्ग, राष्ट्रीय अभिलेखागार, नयी दिल्ली, डॉ. परशुराम शर्मा, नयी दिल्ली, डॉ. मधु नागला, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, सुदर्शन गुप्ता राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, पलोरा, जम्मू का आभार व्यक्त करती है।

श्वेता राव विशेष धन्यवाद की पात्र हैं जिन्होंने इस पाठ्यपुस्तक को डिजाइन करने की चुनौती को स्वीकार किया और वास्तव में हमारे प्रयत्नों को संभव बनाया। उनका योगदान प्रत्येक पृष्ठ पर स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है। परिषद् जैसना जयचन्द्रन, शाध छात्रा, सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ़ सोशल सिस्टम्स, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नयी दिल्ली की उनके योगदान एवं सहयोग के लिए आभारी है।

प्रोफ़ेसर सतीश सबरवाल एवं प्रोफ़ेसर एन. जयराम सदस्य, मॉनिटरिंग कमेटी विशेष धन्यवाद के पात्र हैं जिनकी सतर्क टिप्पणियों एवं सुझावों से हम बहुत अधिक लाभान्वित हुए।

अंततः हम उन सभी सदस्यों एवं व्यक्तियों के प्रति आभारी हैं जिन्होंने हमें प्रकाशनों से सामग्री का उपयोग करने की अनुमति दी। परिषद् श्री आर. के. लक्ष्मण की विशेष आभारी है जिन्होंने हमें अपने कार्टून उपयोग करने की अनुमति दी। परिषद् मालविका कारलेकर का उनकी पुस्तक 'विज्युलाइजिंग इंडियन वुमेन' 1875-1947, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित छायाचित्रों का उपयोग करने के लिए आभार व्यक्त करती है। परिषद् राधा कुमार के प्रति उनकी पुस्तक द हिस्ट्री ऑफ़ डूइंग:एन इलस्ट्रेटेड एकाउंट ऑफ़ मूवमेंट फॉर वीमंस राइट्स एंड फेमीनिज्म इन इंडिया 1800-1990 के छायाचित्रों एवं रवि अग्रवाल के छायाचित्रों के संकलन के लिए भी आभारी है। कुछ छायाचित्र राजस्थान पर्यटन विभाग, राजस्थान सरकार, नयी दिल्ली से लिए गए हैं हम उनके भी आभारी हैं। हमने कुछ सामग्री एवं छायाचित्रों को इंडिया टुडे, आउटलुक और फ्रंटलाइन एवं कुछ समाचारपत्रों जैसे द हिंदू, द टाइम्स ऑफ़ इंडिया और द इंडियन एक्सप्रेस से भी लिया है इसके लिए हम उनके आभारी हैं। परिषद् रेल म्यूजियम लाइब्रेरी, चाणक्यपुरी, नयी दिल्ली के प्रति आभार प्रदर्शित करती है। परिषद् वाई.के. गुप्ता एवं आर. सी. दास, केन्द्रीय शैक्षिक तकनीकी संस्थान के सहयोग के प्रति भी आभार व्यक्त करती है।

पुस्तक के विकास के विभिन्न चरणों में सहयोग के लिए डी.टी.पी. ऑपरेंटर उत्तम कुमार, नाजिया खान एवं ईश्वर सिंह, कॉपी एडिटर मनोज मोहन, प्रूफ रीडर अनामिका गोविल, प्रभारी कंप्यूटर कक्ष दिनेश कुमार के प्रति भी हम आभारी हैं। प्रकाशन विभाग द्वारा हमें पूर्ण सहयोग एवं सुविधाएँ प्राप्त हुईं, इसके लिए हम उनका आभार व्यक्त करते हैं।

विषय-सूची

आमुख	v
अध्ययन के लिए सुझाव	viii
अध्याय 1 संरचनात्मक परिवर्तन	1-16
अध्याय 2 सांस्कृतिक परिवर्तन	17-36
अध्याय 3 भारतीय लोकतंत्र की कहानियाँ	37-56
अध्याय 4 ग्रामीण समाज में विकास एवं परिवर्तन	57-72
अध्याय 5 औद्योगिक समाज में परिवर्तन और विकास	73-90
अध्याय 6 भूमंडलीकरण और सामाजिक परिवर्तन	91-112
अध्याय 7 जनसंपर्क साधन और जनसंचार	113-134
अध्याय 8 सामाजिक आंदोलन	135-160
शब्दावली	161-164

अध्ययन के लिए सुझाव

प्रथम पुस्तक को आप पहले ही पढ़ चुके हैं। अतः आप राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के इस मूलभाव से परिचित हो चुके हैं कि पाठ्यपुस्तकें जीवन में संचार करती हैं। यह विचार आपको रटने की पद्धति से दूर ले जाता है। पाठ्यपुस्तक में यह प्रयास किया गया है कि “आपको विचार करने और चकित होने के अवसर मिलें, आप छोटे-छोटे समूहों में बातचीत कर सकें तथा दिन प्रतिदिन के अनुभवों से जुड़ी हुई क्रियाएँ कर सकें।” हमारे प्रयास में विषयवस्तु को समकालीन सामाजिक वातावरण और बच्चों के दैनिक क्रियाकलापों से जोड़ा जाए। इसे संभव बनाने के लिए हमने समाचारपत्रों की रिपोर्ट, पत्रिकाओं के लेखों तथा काल्पनिक कथाओं के संक्षिप्त भावों को बॉक्स में प्रस्तुत किया है। इसके साथ ही सरकारी प्रतिवेदन तथा बच्चों के दिन प्रतिदिन के जीवन के उदाहरणों को भी प्रस्तुत किया गया है। इस कारण अभ्यास एवं क्रियाकलाप पाठ्यपुस्तक में आवश्यक अंग बन गए हैं। समाजशास्त्रीय लेखन से भी कुछ पक्ष लेने के प्रयास किए गए हैं ताकि आप समाजशास्त्रीय अनुसंधान से परिचित हो सकें।

हमारे लिए यह सारा प्रयास चुनौतीपूर्ण रहा है एवं कभी-कभी यह कठिन भी रहा है। हम इस तथ्य से परिचित हैं कि आपके सुझाव भविष्य में इन पुस्तकों को सुधारने के लिए सहायक सिद्ध होंगे। कृपया हमें निम्नलिखित पते पर लिखें—विभागाध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंदो मार्ग, नयी दिल्ली-110016। आप हमें ई-मेल भी कर सकते हैं—ncertsociologytexts@gmail.com हमें आपके जवाबों का इंतजार रहेगा। विशेषतः आपकी आलोचनात्मक प्रतिक्रियाएँ एवं पुस्तक में सुधार के लिए सुझावों का हम स्वागत करेंगे। हम आपको यह विश्वास दिलाते हैं कि पाठ्यपुस्तक के आगामी संस्करण में उपयोगी सुझावों को सम्मिलित किया जाएगा।

प्रो.फ़ेसर मैत्रेयी चौधरी
प्रो.फ़ेसर मंजू भट्ट

DINESH INTERIOR DECORATOR
CURTAIN RODS • WALL PAPER • VERTICAL BLINDS • PVC FLOORING
WOODEN CURTAIN ROD • CARPETS • PLASTIC DOORS • VENETIAN BLINDS
G-39, MASOODPUR, OPP. FLYOVER, V.K., N.D-70. Ph: 26892544, 9213678636

WALL PAPER

war. For them, both the Com-
all as its protagonists like
and Warren Hastings
operations and
ing through
and sub-

s-
een
d the
a, and
solved?
istorian
candal of
itish State
corruption
whether the
was so clear-
ive or a nefari-
were divisions

modern-day enter-
prise. "There are major differences, of course,
the most obvious one being that the Company
obtained a royal charter to conduct its trade
a monopoly in the East. It would be wrong
an 18th century corporation with
eyes. There can't be an East

BRITAN
P

NBCampus

1 संरचनात्मक परिवर्तन



12110CH01

वर्तमान को समझने के लिए यह जरूरी है कि उसके अतीत के कुछ पक्षों की भी जानकारी हो। अतीत का यह ज्ञान किसी भी व्यक्ति या समूह या फिर भारत जैसे पूरे देश को जानने हेतु आवश्यक है। भारत का इतिहास काफ़ी समृद्ध एवं विस्तृत है। भारत के अतीत की जानकारी प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत को जानने से मिलती है। जबकि आधुनिक भारत को समझने के लिए जरूरी है कि भारत के औपनिवेशिक अनुभवों को जानें। भारत में आधुनिक विचार एवं संस्थाओं की शुरुआत औपनिवेशिकता की देन है। उपनिवेशवाद के प्रभाव के कारण भारत ने आधुनिक विचारों को जाना। यह एक विरोधाभासी स्थिति भी थी। इस दौर में भारत ने पाश्चात्य उदारवाद एवं स्वतंत्रता को आधुनिकता के रूप में जाना वहीं दूसरी ओर इन पश्चिमी विचारों के विपरीत भारत में ब्रितानी उपनिवेशवादी शासन के अंतर्गत स्वतंत्रता एवं उदारता का अभाव था। इस तरह के अंतः विरोधी तथ्यों ने भारतीय सामाजिक संरचना एवं संस्कृति में परिवर्तनों को दिशा दी एवं उन पर प्रभाव डाला। ऐसे अनेक संरचनात्मक और सांस्कृतिक परिवर्तनों के बारे में अध्याय 1 और 2 में चर्चा की गई है।

अगले कुछ पाठों में यह बात साफ़ उभर कर आएगी कि किस प्रकार भारत में सामाजिक सुधार और राष्ट्रीय आंदोलन, हमारी विधि व्यवस्था, हमारा राजनीतिक जीवन और संविधान, हमारे उद्योग एवं कृषि, हमारे नगर और हमारे गाँव—इन सब पर उपनिवेशवाद के विरोधाभासी अनुभवों का गहरा प्रभाव पड़ा। उपनिवेशवाद के साथ हमारे इन विरोधाभासी संबंधों का प्रभाव आधुनिकता पर भी पड़ा। इसके कुछ उदाहरण, जो हम अपने आम जीवन में पाते हैं, वे इस प्रकार हैं:-

हमारे देश में स्थापित संसदीय, विधि एवं शिक्षा व्यवस्था ब्रिटिश प्रारूप व प्रतिमानों पर आधारित है। यहाँ तक कि हमारा सड़कों पर बाएँ चलना भी ब्रिटिश अनुकरण है। सड़क के किनारे रेहड़ी व गाड़ियों पर हमें 'ब्रेड-ऑमलेट' और 'कटलेट' जैसी खाने की चीजें आमतौर पर मिलती हैं। और तो और, एक प्रसिद्ध बिस्कुट निर्माता कंपनी का नाम भी 'ब्रिटेन' से संबद्ध है। अनेक स्कूलों में 'नेक-टाई' पोशाक का

